आलेख:
बसंतपर्व पर विःशेषः

बौराई प्रकृति एवं सहमे संत–महंतों का मौसम

शीत ऋतु अभी चरम पर है। जैसे दीपक बुझने के पूर्व तेजी से प्रज्वलित होता है, विदा होती शीत ऋतु भी निखर कर अपन अस्तित्व का बोध करवा रही है। ऋतु–संधि पर आने वाला बसंत सर्दी एवं गर्मी दोनों ऋतुओं का सेतु बनकर जनमानस ही नहीं सम्पूर्ण प्रकृति को एक विचत्र उमंग से आह्लादित कर देता है। नवकुसमों के खिलने के साथ मिट्टी से भी इन दिनों मनभावन खुशबू आने लगती है। यही वह समय है जब नदियां उमड़–उमड़ कर समुद्र की ओर दौड़ने लगती हैं, भौरें मधुपान करने लगते हैं एवं लताऐं शाखाओं पर झूमने लगती हैं। प्रकृति सर्वत्र अपने मद का ताण्डव करती हुई नजर आती है। जड़ प्रकृति की इसो दशा के चलते मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षियों का काम भाव भी इन दिनों चरम पर होता है। इसीलिए बसंत को बौराई प्रकृति एवं सहमे संत–महंतों का मौसम भी कहते हैं। यही वह समय है जब कामदेव अपने साम्राज्य का विस्तार करते हैं। अनंग के इस वासंती विस्तार को तुलसी क्या खूब लिखते हैं–

सबके हृदय मदन अभिलाषा।
लता निहारि नवहिं तरूशाखा।।
सदाचार जप जोग विरागा।
सभय विवेक कटुक सब भागा।।

तुलसी ही नहीं बसंत के इस मदभरे रूप का वर्णन कर कितने ही कवियों ने अपनी लेखनी को धन्य किया है। राजस्थान में श्रंगार रस के लोकप्रतिष्ठित कवि श्री विमल मेहरा ने कितने सुन्दर शब्दों में इस समां को बांधा है–

सरसों जोगनिया हुई
गेंदा हुए मलंग
पीत वस्त्र धारण किये
अपने–अपने अंग

यह अद्भुत संयोग है कि बसंत जहां एक और कामदेव का पर्व है वहीं दूसरी और माँ सरस्वती का जन्मोत्सव इन्हीं दिनों आने के कारण यह सारस्वत आराधना का भी पर्व है। इन मायनों में इस पर्व को मनुष्य के कामभाव पर सारस्वत भाव की विजय का पर्व भी कहा जा सकता है। इसका एक अप्रत्यक्ष अर्थ यह भी है कि जगत के सुव्यवस्थित संचालन के लिए काम अर्थात ऊर्जा की भी आवश्यकता है तथा इस ऊर्जा का नकारात्मक प्रसार अथवा उद्वेलन न हो, काम साम्यक–संयमित भाव में रहे अतः सारस्वत भाव का भी उतना ही महत्व है। यही कारण है कि कामदेव एवं सरस्वती दोनों धर्म के अधिष्ठाता देव भी कहे गए हैं।

पुरातन काल से ही सरस्वती एवं कामदेव दोनों ने धर्म की स्थापना में अहम् योगदान दिया है। ऐसी अनेक कथाएँ हैं जो इस सत्य को प्रतिष्ठित करती है। दशरथ द्वारा राम राज्याभिषेक की घोषणा के पश्चात् ब्रह्मा सहित सभी देवता व्याकुल हो गए थे। राम राज्याभिषेक हो गया तो फिर धरती पर राक्षसों का शमन कैसे होगा? तब मंथरा द्वारा कैकेयी की बुद्धि को भ्रमित करने के लिए देवों ने सरस्वती से ही अनुनय–विनय किया था। सरस्वती ने तब मंथरा की बुद्धि को भ्रष्ट कर इस दुष्कर कार्य को सिद्ध किया था। तुलसी की चौपाई '' अजस पिटारी ताहि करि गई चेरि मति फेरि'' इसी सत्य का उद्घाटन है। इसी तरह तारक नाम का असुर तीनों लोकों को आक्रांत कर जब ऋषियों, मनस्वियों एवं तपस्वियों पर अमानुषिक जुल्म ढा रहा था तब सभी

देवता थक–हारकर ब्रह्मा की शरण में आये। ब्रह्मा ने उन्हें बताया कि इस राक्षस का वध शिव–पार्वती के अंश से उत्पन्न पुत्र कार्तिकेय ही कर सकता है। लेकिन शिव तब समाधिस्थ थे। कौमार्या पार्वती उन्हें पाने के लिए कठोर तप कर रही थी। शिव समाधि के भंग हुए बिना यह कार्य असंभव था। तब धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों को दाँव पर लगाकर कामदेव ने इस दुष्कर कार्य को सिद्ध किया। उन्होंने बसंत का प्रादुर्भाव कर शिव समाधि को भंग किया। भंग तपस्या से कुपित शिव ने उन्हें वहीं भस्म कर दिया। उसी दिन से कामदेव अनंग अर्थात बिना अंग के हो गए। कामदेव की पत्नी रति ने शिव चरणों का आश्रय लिया तो उन्होंने उसे अभय किया कि तुम्हारा पति अनंग रूप में अजर–अमर रहेगा। जब तक सृष्टि रहेगी अनंग जड़–चेतन को बौराता रहेगा। शिव के वरदान से कृतार्थ रति तब जड़–चेतन सभी के हृदयों में इस आशय के साथ प्रविष्ट कर गई कि बसंत के प्रादुर्भाव के समय जब उसका अशरीरी पति सब के हृदय में काम जगाएगा तब उनका प्रयोजन सिद्ध करने में वह उन्हें सहयोग करेंगी। अनंग आज भी बसंत के प्रादुर्भाव के साथ मौन पदचाप से प्रकृति में प्रविष्ट करता है। उसके आगमन से चराचर प्रकृति आह्लादित हो उठती है। रति उसे सहयोग कर जीवन के नये अंकुर स्थापित करती है। मन की उमंग के रचनात्मक रेचन के लिए ही लोहड़ी एवं होली जैसे त्यौहारों का सृजन हुआ है। ऐसे त्यौहार शिष्ट तरीकों से मन के उन्माद को रेचन देते हैं। प्रकृति में बसंत के आगमन के साथ ही संसार भर में उत्सवों की धूम लग जाती है। फसलों की कटाई होने से इस समय किसानों के पास धन भी आता है। आर्थिक रूप से सम्पन्न किसान अपने परिवारजनों के साथ उत्सव का पूरा आनंद लेते हैं।

बसंत के इस बौराये मन को निश्चित ही एक घटना विषाद से भर देती है। स्वतत्रंता आंदोलन के समय इन्हीं दिनों जलियावालां बाग में जनरल डायर ने निहत्थे स्वाधीनता प्रेमियों को गोलियों से भून दिया था। बच्चों एवं औरतों तक को उसने नहीं छोड़ा। इस घटना से क्षुब्ध कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा था .....

आना प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना।
यह है शोकस्थान यहां मत शोर मचाना।।
कोमल बच्चे गिरे यहां गोली खा–खा कर।
कलियां उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।।

आइये, इस पर्व पर हम उनका भी नमन् करें।

लेखक

(हरिप्रकाश राठी)

पता :–
94141–32483
सी–136, प्रथम विस्तार,
कमला नेहरू नगर, जोधपुर।
लेखक साहित्यकार है।